आरोग्या आनंदसों, जेणे जे भाव्यां।
दूध दधी ते ऊपर, लाडबाई लई आव्यां।। १५ ।।

जिसको जो कुछ अच्छा लगा, सभी ने आनन्द से आरोगा। इसके बाद दूध और दही लेकर लाडबाईजी आ गईं।

ते लीधां चल्लू करावियां, बेठा वांसे तकियो दई।
थाल बाजोट उपाडियां, लोयुं मुख रुमाल लई।। १६ ।।

उन्होंने आकर चुल्लू कराया। तब सब तकियों का सहारा लेकर बैठ गए। थाली व चौकियां उठा ली गईं तथा रूमाल से मुख पोंछा।

फोफल काथो चूना जावंत्री, केसर कपूर घाली।
ऊपर लवंग दई करी, पान बीडी वाली।। १७ ।।

सुपारी, कत्था, चूना, जावित्री, केसर, कपूर तथा ऊपर से लौंग लगाकर पान के बीड़े लगाए।

बीडी ते लई आरोगिया, वली लीधी सहु साथ।
साथ हुतो जे प्रीसणे, सखियोने प्रीसे प्राणनाथ।। १८ ।।

श्री राजजी महाराज ने पान बीड़ा आरोगा। सब सुन्दरसाथ ने भी पान बीड़ा लिया। जो सुन्दरसाथ परोस रहे थे, उनको अब प्राणनाथ स्वयं परोस रहे हैं।

आरोग्या सहु अति रंगे, बीडी लीधी श्री मुख।
बेठा मली वातो करवा, वाणी लेवा सुख।। १९ ।।

सब सखियों ने बड़े आनन्द से आरोगा और पान बीड़ा लिया। इसके बाद सब मिलकर बातें करने बैठे और वचनों का आनन्द लेने लगे।

कहे इंद्रावती साथजी, वाले विलास जो कीधा।
चढी आव्या अंग अधिका, वचे व्रह जो दीधा।। २० ।।

इन बातों में विलास और बीच में जो वियोग अन्तर्ध्यान का हुआ था, श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, वह याद आ गया।

॥ प्रकरण ॥ ४६ ॥ चौपाई ॥ ८६७ ॥

राग श्री गोडी रामग्री

वाला वालमजी मारा, जीरे प्रीतम अमारा।। टेक ।।
तमे रामत रंगे रमाडियां, पण सांभलो मारी वात।
अम ऊपर एवडी, तमे कां कीधी प्राणनाथ।। १ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि हे मेरे प्यारे वालाजी! आपने हमें बड़े आनन्द से रामतें खिलाईं, परन्तु हमारी बात भी सुनो। आपने हमारे साथ ऐसा क्यों किया?

अवगुण एवडा अमतणां, किहां हुता वालम।
एम अमने एकलां, मूकी गया वृंदावन।। २ ।।

हे धनी! इतना बड़ा अवगुण हमारे में कहां था? जिससे आप हमें वृन्दावन में अकेला छोड़कर चले गए।

Nijanand App

तमे अमथी अलगां थया, त्यारे व्रह थयो अति जोर।
तमे वनमां मूकी गया, अमे कीधा घणां बकोर।। ३ ।।

जब आप हमसे अलग हुए थे तो आपका विरह बहुत बढ़ गया। आप तो हमें वन में छोड़कर चले गए, पर हम बहुत रोए-चिल्लाए।

तम विना जे घडी गई, अमे जाण्यां जुग अनेक।
ए दुख मारो साथ जाणे, के जाणे जीव वसेक।। ४ ।।

हे वालाजी! आपके वियोग में हमारा एक-एक पल अनेक युगों की तरह बीता। इस दुःख को मेरा जीव ही जानता है तथा हमारी सब सखियां जानती हैं।

ए दुखनी वातो केही कहुं, जीव जाणे मन मांहें।
जे अम ऊपर थई एवडी, त्यारे तमे हुता क्यांहें।। ५ ।।

हे वालाजी! इस दुःख की बात कैसे कहूं? मेरा जीव मन में अनुभव करता है। हमारे ऊपर ऐसी बीती, उस समय आप कहां थे?

हवे न मूकूं अलगो वाला, पल मात्र तमने।
तमारा मनमां नहीं, पण दुख लाग्युं अमने।। ६ ।।

हे वालाजी! अब आपको एक पल के लिए नहीं छोडूंगी। आपके मन में तो कुछ नहीं है, परन्तु हमें तो दुःख हुआ है।

पालखी अमे करूं रे वाला, तमे बेसो तेहज मांहें।
अमें उपाडीने चालिए, हवे नहीं मूकूं खिण क्यांहें।। ७ ।।

हे वालाजी! हम बांहों की पालकी बनाते हैं। उसमें आप बैठ जाइए। हम उठाकर चलेंगे और तुम्हें एक पल के लिए भी छोड़ेंगे नहीं।

हूं अलगो न थाऊं रे सखियो, आपणी आतमा एक।
रामत करतां जुजवी, कांई दीसे छे अनेक।। ८ ।।

वालाजी ने कहा, मैं किसी भी तरह से सखियों से अलग नहीं होता हूं। अपनी आत्मा एक है, खेलने में हम अलग-अलग दिखाई देते हैं।

सखियो वात हूं केही कहुं, जीव मारो नरम।
वल्लभ मारा जीवनी प्रीतम, अलगी करूं हूं केम।। ९ ।।

हे सखियो! मैं तुमसे क्या बात कहूं? तुम मेरे प्राण के प्रीतम हो। मेरा जीव भी अति कोमल है। मैं तुमसे अलग कैसे हो सकता हूं?

तमथी अलगो जे रहुं, ते जीव मारे न खमाय।
एक पलक मांहें रे सखियो, कोटानकोट जुग थाय।। १० ।।

वालाजी कहते हैं, यदि मैं तुमसे अलग रहूं तो मेरा जीव यह सहन नहीं कर सकता। वियोग का एक पल करोड़ों युगों के समान होता है।

Nijanand App

विरह तमने दोहेलो लागे, मूने तेथी जोर।
मुख करमाणां नव सहुं, तो केम करावुं बकोर।। ११ ।।

हे सखियो! तुमको मेरा वियोग दुःखदाई लगा। मुझे तो उससे भी अधिक दुःखदाई लगा। मैं तो तुम्हारे मुरझाए मुख को भी नहीं सहन कर सकता, तो इतने जोर से कैसे रुलाऊंगा?

जेम कहो तेम करूं रे सखियो, बांध्या जीव जीवन।
अधखिण अलगो न थाऊं, करार करो तमे मन।। १२ ।।

हे सखियो! तुम जैसा कहो, वैसा करूं। मेरा जीव तुम्हारे जीवन से बंधा है। मन में विश्वास रखो कि मैं आधे पल के लिए भी तुमसे जुदा नहीं हो सकता।

एवडा दुख ते कां करो, हूं दऊं एम केम छेह।
तमे मारा प्राणनां प्रीतम, बांध्या जे मूल सनेह।। १३ ।।

हे सखियो! तुम इतना दुःखी क्यों होती हो? मैं तुम्हें ऐसे कैसे छोड़ दूंगा? हमारा तुम्हारा सम्बन्ध मूल से है। तुम तो मेरे प्राणों की प्यारी हो।

प्राणपे वल्लभ छो मूने, एम करूं हूं केम।
में वृंदावन मूक्यूं नथी, तमे कां कहो अमने एम।। १४ ।।

हे सखियो। तुम तो मेरे प्राणों से भी प्यारी हो। मैं ऐसे कैसे कर सकता हूं? मैंने तो वृन्दावन छोड़ा ही नहीं, तुम मुझे ऐसा क्यों कहती हो?

चित ऊपर चालूं रे सखियो, तमे मारा जीवन।
जेम कहो तेम करूं रे सुन्दरी, कां दुख आणो मन।। १५ ।।

हे सखियो! तुम मेरा जीवन हो। तुम्हारी इच्छा के अनुसार ही चलता हूं। अब जैसा कहो, वैसा मैं करूं। तुम मन में दुःख क्यों लाती हो?

आतमना आधार छो मारा, जीवसूं जीव सनेह।
करूं वात जीवन सखी, मुख मांहेंथी कहो जेह।। १६ ।।

हे सखियो! तुम मेरी आत्मा के आधार हो। मेरा जीव तुम्हारे जीव के साथ प्रेम से बंधा है। इसलिए, हे जीवन सखी! तुम मुख से जो कहोगी वह बात मैं करूंगा।

में तां एम न जाण्यूं रे वाला, करसो एम निघात।
नाहोजी हूं तो नेह जाणती, आपण मूल संघात। १७ ।।

सखियां कहती हैं, वालाजी! हमने तो ऐसा नहीं समझा था कि आप हमको ऐसी ठेस लगाओगे। हे प्रीतम! मैं तो अपने मूल का सम्बन्ध जानकर ही प्यार करती थी।

एम आंखडी न चढाविए तेने, जे होय पोतानो तन।
जाणिए मेलो नथी जनमनो, उथले रास वचन।। १८ ।।

जो अपना ही तन हो उसके ऊपर आंख नहीं चढ़ानी चाहिए। ऐसे लगता है हमारा और आपका जन्म का सम्बन्ध नहीं था। तभी तो आपने उलाहना के वचन कहे।

Nijanand App

अमे तूंने जोपे जाणूं, बीजो न जाणे जंन।
अमसूं छेडा छोडीने ऊभा, जाणिए नेह निसंन।। १९ ।।

आपको हम अच्छी तरह जानते हैं। दूसरा कोई नहीं जानता। आप हमसे वैसे पल्ला छुड़ाकर ऐसे खड़े हो गए, जैसे बालक खेल में प्रेम तोड़ देते हैं।

सांभलो सखियो वात कहूं, में जोयूं मायानूं पास।
केम रमाय रामत रैणी, मन उछरंगे रास।। २० ।।

हे सखियो! मैं एक बात कहता हूं, सुनो। मैंने देखा था कि तुम्हारे अन्दर माया का असर तो नहीं है, अन्यथा मन में उमंग भरकर रात में रास कैसे खेलते?

ते माटे बोल कह्या में कठण, जोवाने विस्वास।
नव दीठो कोई फेर चितमां, हवे हूं तमारे पास।। २१ ।।

तुम्हारा विश्वास आजमाने के लिए ही मैंने कठिन वचन बोले थे। तुम्हारे मन में किसी प्रकार का बदलाव नहीं देखा। अब मैं तुम्हारे पास ही हूं।

एनो तमे जवाब दीधो, केम रोतां मूक्यां वन।
नहीं विसरे दुख ते विरह ना, अमने जे उतपन।। २२ ।।

हे वालाजी! आपने हमें रोता हुआ वन में क्यों छोड़ा? इसका आपने जवाब दे दिया है, किन्तु हमें जो वियोग का दुःख हुआ, वह नहीं भूलता है।

घणूज साले विरह वालैया, जे दीधूं तमे अमने।
केटली वात संभारूं दुखनी, हवे सूं कहूं तमने।। २३ ।।

हे वालाजी! विरह का दुःख जो आपने हमें दिया, वह बहुत ही सताता है। दुःख की बातें मैं आपसे कितनी याद करके कहूं?

कां जाणो एवडो अन्तर, हूं अलगो न थाऊं।
तमने मेली वनमां, हूं ते किहां जाऊं।। २४ ।।

वालाजी कहते हैं कि आपको छोड़कर भला मैं कहां जाऊंगा? तुमने इतना अन्तर क्यों समझ लिया है? मैं अलग नहीं होऊंगा।

विरह तमारो नव सहूं, गायूं तमारूं गाऊं।
अंग मारूं अलगूं न करूं, प्रेम तमने पाऊं।। २५ ।।

वालाजी कहते हैं कि जो तुमने हमसे कहा है, वही मैं तुमसे कह रहा हूं कि तुम्हारा वियोग मेरे से भी सहन नहीं होता। मैं अपने आपको तुमसे कभी अलग न करूंगा और तुम्हें प्रेम करूंगा।

अमे ठाम सघला जोया रे वाला, क्यांहें न दीठो कोय।
जो तमे हुता वनमां, तो विरह केणी पेरे होय।। २६ ।।

हे वालाजी! हमने सारी जगह देखा और कहीं कोई दिखाई नहीं दिया। यदि आप वन में होते तो हमको बिछुड़ने का दुःख क्यों होता?

Nijanand App

वन वेलडियो जोई सर्वे, घणे दुखे घणूं रोय।
घणी जुगते जोयूं तमने, पण केणे न दीठो कोय।। २७ ।।

हमने वन की सभी बेलों को देखा और बड़े दुःख के साथ रोए। बड़ी युक्ति से आपको ढूंढ़ा, पर आप किसी को दिखाई नहीं दिए।

तमे कहो छो वनमां हुता, तो कां नव लीधी सार।
अमे वन वन हेठे विलखियो, त्यारे कां नव आव्या आधार।। २८ ।।

आप कहते हो कि मैं वन में था, तो आपने हमारी खबर क्यों नहीं ली? हम वन में भटक-भटक कर रोते रहे, फिर वालाजी! आप क्यों नहीं आए?

जो तमे न होता वेगला, तो कां नव सुणी पुकार।
अमने देखी रोवंतां, केम खम्या एवडी वार।। २९ ।।

जब आप हमसे अलग नहीं थे, तो आपने हमारी आवाज क्यों नहीं सुनी? हमको रोता देखकर इतनी देर तक आपने सहन कैसे किया?

बोलो ते सर्वे वात झूठी, वनमां न हुता निरधार।
नेहेचे जाणूं नाहोजी, तमे झूठा बोल्या अपार।। ३० ।।

हे वालाजी! आप निश्चित ही वन में नहीं थे। आपकी सब बातें झूठी हैं। मैं अच्छी तरह जानती हूं कि आप अधिक झूठ बोल रहे हो (बहुत झूठे हो)।

जो विरह अमारो होय तमने, तो केम बेसो करार।
तम विना खिण जुग थई, वन भोम थई खांडा धार।। ३१ ।।

हे वालाजी! यदि आपको हमारे वियोग का दुःख होता, तो आप चैन से नहीं बैठते। आपके बिना एक पल एक युग के समान बीता और यह धरती तलवार की धार बन गई।

दाझ घणी थई देहमां, लागी कालजडे झाल।
जाणूं जीव नहीं रेहेसे, निसरसे तत्काल।। ३२ ।।

हे वालाजी! हमारे हृदय में आग (विरह की) लगी थी, जिससे हमारा शरीर झुलस रहा था। लगता था कि जीवन नहीं रहेगा। तुरन्त प्राण निकल जाएंगे।

एवो विरह खमी रह्यो, में जाणूं जीवनी नाल।
आसा अमने नव मूके, नहीं तो देह छाडूं तत्काल।। ३३ ।।

हे वालाजी! हमने आत्मा का मूल सम्बन्ध जानकर ही आपका इतना वियोग सहन कर लिया। हमको आशा नहीं छोड़ रही थी (मिलने की आशा थी), अन्यथा तुरन्त शरीर छोड़ देते।

तमे केहेसो जे एम कहे छे, नेहेचे जाणो जीव माहें।
तमारा सम जो तम विना, एक अधखिण में न खमाए।। ३४ ।।

हे वालाजी! तुम कहोगे कि ऐसे कहते हो। इस बात को निश्चित रूप से आप जीव में जानें कि आपके वियोग का आधा क्षण भी सहन नहीं होता। मैं आपकी कसम खाकर कहती हूं।

Nijanand App

सखियो तमे साचूं कह्युं, ए वीती छे मूने वात।
तमने विरह उपनूं मारो, हूं कहूं तेहेनी भांत।। ३५ ।।

वालाजी कहते हैं कि सखियो! तुमने सत्य कहा है। ऐसी मुझ पर भी बीती थी। तुमको हमारे वियोग का दुःख लगा। उसकी हकीकत बताता हूं।

आपण रंग भर रमतां, बिरिख आडो आव्यो खिण एक।
तमे प्रेमे जाण्यूं कई जुग वीत्या, एम दीठां दुख अनेक।। ३६ ।।

वालाजी कहते हैं कि हम जब आनन्द में खेल रहे थे, तब हमारे तुम्हारे बीच में एक पल के लिए पेड़ आ गया। तुमने जाना अनेक युग बीत गए और इस तरह से बहुत दुःख देखे।

ज्यारे पसरी जोगमाया, में इछा कीधी तमतणी।
हूं वेण लऊं तिहां लगे, मुझपर थई घणी।। ३७ ।।

जैसे ही योगमाया का विस्तार हुआ, मुझमें भी तुम्हें पाने की लालसा ने बल पकड़ा। बंसी को हाथ में लेने तक जितनी देर लगी, क्या कहूं मुझ पर क्या बीती? इसमें इतना समय बीत गया।

एक पल मांहें रे सखियो, कलप अनेक वितीत।
ए दुख मारो जीव जाणे, सखी प्रेमतणी ए रीत।। ३८ ।।

हे सखी! प्रेम की यही रीति है। प्रेम में एक पल के वियोग में अनेक कल्प बीत गए, ऐसा लगता है। इस दुःख को मेरा जीव ही जानता है।

भीडी ते अंग इंद्रावती, सखी कां करो तमे एम।
जीवन मारा जीवनी, दुख करो एम केम।। ३९ ।।

वालाजी ने तुरन्त श्री इन्द्रावतीजी को चिपटा लिया और कहा कि सखी! तुम ऐसा क्यों करती हो? तुम तो हमारे जीव का जीवन हो। ऐसे क्यों दुःखी होती हो?

चित चोरी लीधूं दई चुमन, सखी कहो करूं हूं तेम।
मारा जीव थकी अलगी नव करूं, जुओ अलवी थैयो जेम।। ४० ।।

वालाजी ने श्री इन्द्रावतीजी को चुम्बन देकर चित्त को हर लिया और कहा, सखी! तुम जैसा कहो मैं वैसा ही करूंगा। देखो, हम कैसे अलग हो गए थे।

सखियो मारी वात सुणो, कां करो ते एवडो दुख।
पूरूं मनोरथ तमतणां, सघली वाते दऊं सुख।। ४१ ।।

हे सखियो! मेरी बात सुनो। ऐसा दुःख क्यों करती हो? मैं तुम्हारी मनोकामनाओं को पूर्ण करूंगा तथा हर प्रकार से सुख दूंगा।

मारूं अंग वालूं तमतणे, वचन वालूं जिभ्या मुख।
बोलावुं ते मीठे बोलडे, जोऊं सकोमल चख।। ४२ ।।

मैं अपने अंग तुम्हारी तरफ झुकाता हूं तथा जिह्वा और मुख से कहे वचनों को वापस लेता हूं। आगे मधुर बोली बोलूंगा और प्यार भरे नैनों से देखूंगा।

Nijanand App

हवे वाला हूं एटलूं मांगूं, खिण एक अलगां न थैए।
जिहां अमने विरह नहीं, चालो ते घर जैए।। ४३ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे वालाजी! मैं इतना ही मांगती हूं कि आप हमसे एक पल के लिए भी अलग न हों और जहां हमें आपके बिछुड़ने का दुःख न हो उस घर में ले चलें।

मांगी दुख सुखनी रामत, ते वाले कीधी आवार।
मन चित रंगे रमाड्यां, कांई आपणने आधार।। ४४ ।।

हमने (परमधाम में) सुख और दुःख का खेल मांगा था। उसे वालाजी ने इस बार दिखाया तथा मन-चित्त से अपने वालाजी ने खेल खिलाया।

वृंदावन देखाड्यूं, रास रमाड्यां रंग।
पूर्व जनमनी प्रीतडी, ते हमणां आणी अंग।। ४५ ।।

वृन्दावन दिखाया तथा आनन्द से भरी रास रामतें खिलाईं। मूल सम्बन्ध अब यहां आकर पूरा किया।

इंद्रावती कहे अमने वाला, भला रमाड्यां रास।
पछे ते घर मूल्गे, वालो तेडी चाल्या सह्व साथ।। ४६ ।।
वाला वालमजी मारा, जी रे प्रीतम अमारा।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे वालाजी! आप हमारे प्रीतम हैं। आपने अच्छी रास रामत खिलाई। इसके बाद सखियों को बुलाकर वालाजी अपने मूल घर (परमधाम) को ले चले हैं।

|| प्रकरण || ४७ || चौपाई || ९१३ ||

।।रास-इंजील सम्पूर्ण।।

Nijanand App